RNI NO. : 1276610
ISSN NO : 2456-2645
Impact Factor-3.267

ACADEMIC SOCIAL RESEARCH

(An International Research Journal)

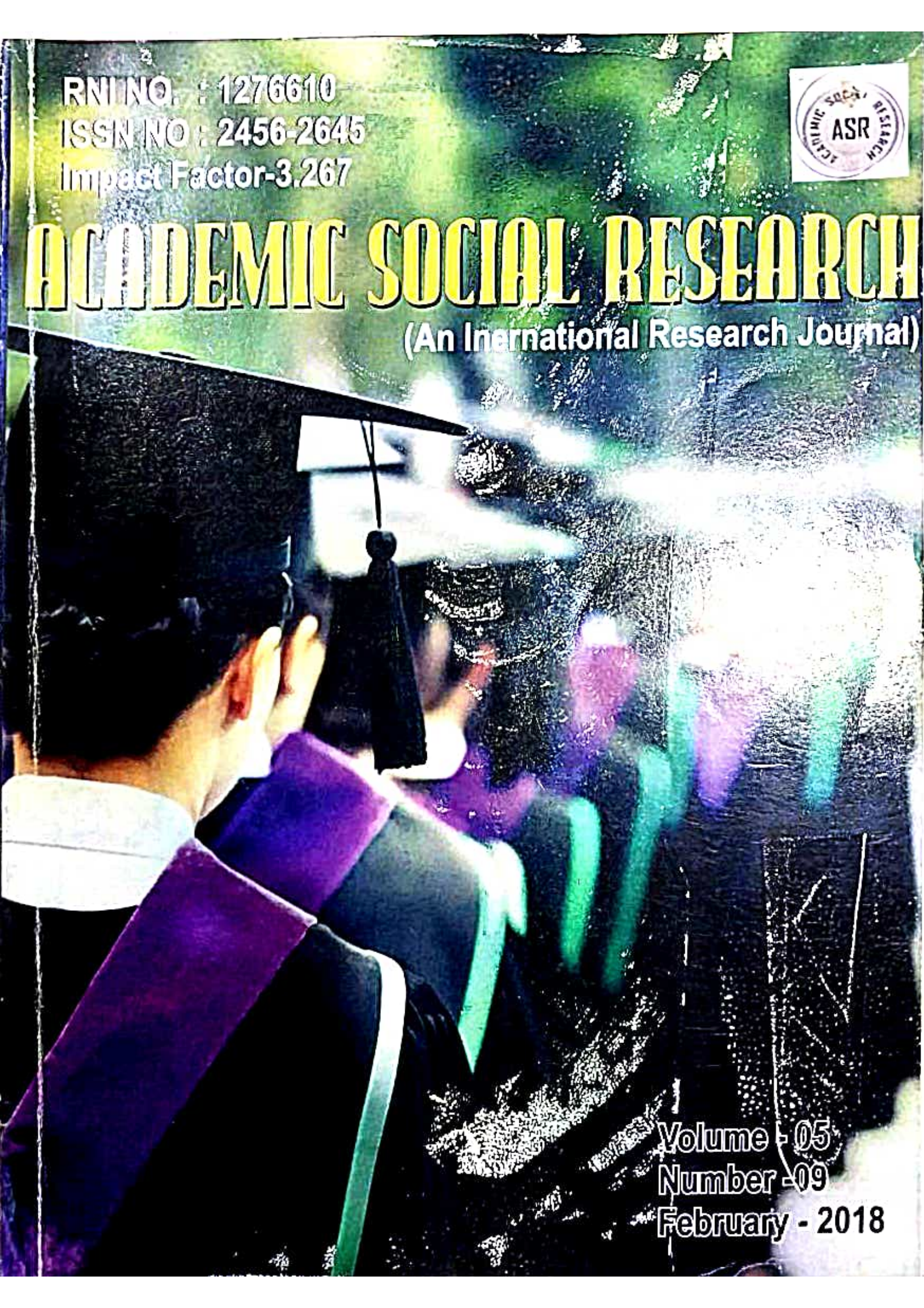

Volume - 05
Number - 09
February - 2018

TABLE OF CONTENTS

SN	TITLE AND NAME OF AUTHOR	PAGE NO.
1	**Dr. Rajesh Kumar Chourasiya** Nanoscale Realized From Multiwall Carbon Nanotubes	1
2	**Dr. Ku. Arun Kumari Singh** A Gateway To Development: Case Of Rural Poor	8
3	**Dr. J.L. Barmaiya** Gender Differentials Among Teacher Trainees	14
4	**Anita Jhariya** Students And Teachers In The English Department	24
5	**Dr. M.R. Siharey** Impact Of Emerging Trends In E Commerce	38
6	**Dr. Arjun Singh Baghel** Business Ethics Through Business Education	44
7	**Dr. Indoo Mishra** An Economic Liberalisation And Informal Sector In India	48
8	**Dr. Anupama Kajoor** The Impact Of Multimedia Approaches On Society And Culture	54
9	**Mrs. Vinaya Benet** Inhibition Of Net Photosynthesis In Soybean By So_2 And No_2 Applied Alone And In Combination	58
10	**Dr. B.J. Jhariya** Effect Of Nutrition And Health Education Of Rural Mothers On Personal Hygiene Practices Of Their Preschool Children Of Jabalpur District	65
11	**Dr. J.R. Jhariya** Food Intake Pattern Of Tribal Community : A Case Study Of Seoni-Chhindwara Plateau Of (M.P.)	68
12	**T.P. Mishra** Opinion Of The Community Leaders Towards The Developmental Programmes	74

13	**Mrs. M.H. Martin** Synthesis Of Some Novel 2-Azetidinone Derivatives Of 2-Methylbenzimidazole By Conventional Methods	81
14	**DR. Parvati Kushram** Synthesis, Characterization And Evaluation Of Antimicrobial Activity Of 4-Oxo-Thiazolidines And 5-Arylidene Derivatives Of 2-Methyl-Benzimidazoles	83
15	**डॉ. पुष्पलता कुशवाहा** दलित राजनीति पृथक्करण:	87
16	**डॉ. एस.पी. धूमकेती** साहित्य में सम–सामयिक समस्याएँ	92
17	**डॉ. पी.एल. झारिया** संस्कृत भाषा साहित्य का इतिहास	101
18	**डॉ. आर.के. गोंटिया** भूमिगत जलस्त्रोत, एवं जलवायु परिवर्तन बालाघाट जिले की कटंगी तहसील के विशेष सन्दर्भ में	108
19	**डॉ. आर.एस. धुर्वे** गोंड जनजाति एवं बालिकाओं में शैक्षणिक स्थिति का एक समाजशास्त्री अध्ययन (ग्राम कुरई जिला सिवनी के संदर्भ में)	117
20	**डॉ. श्रीकांत श्रीवास्तव** जिला सहकारी कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक छिन्दवाड़ा के कालातीत ऋणों की समस्या एक अध्ययन	123
21	**डॉ. सालिगराम बघेल** भारत में बैंकिग व्यवसाय का बदलता स्वरूप एवं संभावनाएँ	130

Academic Social Research UGC Approved ISSN: 2456-2645
VOLUME-05, ISSUE-09, FAB 2018 IMPACT FACTOR: 3.267

साहित्य में सम–सामयिक समस्याएँ

डॉ. एस.पी. धूमकेती
हिन्दी विभाग
रानी दुर्गावती शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मंडला (म.प्र.)

सारांश

आज के आधुनिक युग में मनुश्य जिस समय और युगीन परिस्थितियों से गुजर रहा है, उसे संज्ञा देना बुद्धि के परे है। फिर भी गहन चिंतन मनन और वैचारिक प्रक्रिया से गुजरते हुए हम इस निश्कर्श पर पहुँच सकते हैं कि आज के युग को विज्ञान, तकनीकी आदि की अपेक्षा विभिन्न समस्याओं से युक्त संक्रमणकालीन युग की संज्ञा दी जानी चाहिए। संसार में मानव और समाज का रिश्ता एक सिक्के के दो अटूट पहलू के रूप में दिखाई देता है। कई तरह के सवाल समाज के सामने आकर खड़े हो गये हैं। साहित्य ही वह माध्यम है जिसका सहारा लेकर समाज के सामने उभरे सवालों और उसके कारणों, समाधानों को बड़ी सूक्ष्मता के साथ उजागर किया जा सकता है।

मुख्य शब्दः आधुनिक युग, समस्याएँ, साहित्य, समाधान, कारण, समाज।

प्रस्तावना : आज के समय में समस्याएँ इस तरह विकराल रूप ले रही हैं कि उसका प्रभाव मानव जीवन पर भी स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है। साहित्य समाज का दर्पण होता है, इतना ही नहीं जिस तरह साहित्य समाज का सत्य उद्घाटित करता है, उसी प्रकार साहित्यकार भी समाज के साथ समाज के साथ पूर्णतः या आंशिक रूप से जुड़ा रहता है और अपने द्वारा देखे गये, जीये गये क्षणों को अनुभवों को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। समाज के प्रश्नों, घटनाओं, समस्याओं और परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण साहित्य में करता है और उसका समाधान कभी यथार्थ रूप में कभी आदर्श रूप में ढूँढ़ने की कोशिश करता है। समाज के सत्य का यथार्थ चित्रण की परम्परा प्रेमचंद युग से आज तक चली आ रही है और उसी परम्परा के अगले क्रम में संजीव हैं जो एक समकालीन यथार्थवादी कथाकार के रूप में जाने पहचाने जाते हैं। संजीव ने अपने रचनात्मक लेखन के माध्यम से अपनी रचनाओं कहानियों एवं उपन्यासों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक सवालों को उजागर किया है।

डॉ. सलीम वेंकटेश्वरराव के अनुसार–"शरीर और छाया या आत्मा एवं

भारीर का जो नित्य एवं शाश्वत सम्बन्ध है, वही सम्बन्ध समस्या एवं मनुश्य जीवन का है।" इससे एक बात तो स्पष्ट है कि मानव जीवन मे यदि समस्याएँ न होती तो मानव का विकास भी न होता। संजीव का सारा कथा संसार इस तथ्य से ओत–प्रोत है। उनके कथा साहित्य पिछड़े, वर्जित क्षेत्र की दर्दनाक व्यथा कथा कहते हैं। उनकी रचनाओं में ग्रामीण आंचलिक मजदूर, भोशित वर्ग, अशिक्षा, राश्ट्रीय सम्पत्ति की लूट, पूँजीपतियों, माफियाओं, डाकूओं, सत्ता भासन व्यवस्था द्वारा किया जाने वाला भोशण, जातिभेद, नारी भोशण, भ्रश्ट व्यवस्था, विस्थापन की त्रासदी, प्रदूशण की समस्या, रोजी–रोटी की समस्या, आदिवासी और स्त्री विमर्श, कला का विलुप्तीकरण, लोककला का बाजारीकरण, दलित समस्या इत्यादि अनेक समस्याओं को अपने कथा–साहित्य में वे उजागर करते हैं।

सामाजिक सवाल संजीव के कथासाहित्य में चित्रित सामाजिक समस्याओं का विभाजन इस प्रकार है। जातिभेद, छुआ–छूत, प्रदूशण, व्यसनाधिनता, अशिक्षा, भादी–ब्याह, भोशण में जमीदार, ठेकेदार, भ्रश्ट अधिकारियों, पुलिस, महाजन द्वारा नारी भोशण, पारिवारिक भोशण, यौन भोशण आदि।

संजीव के साहित्य में जातिभेद की समस्या का चित्रण हुआ है। कहानी 'जब नशा फटता है' में रामकरण बताता है कि ब्राह्मण, राजपूत किसी भी जाति की लड़की को पत्नी बना सकता है। परन्तु अछूत या निम्न वर्ग का उच्च जाति की लड़की से ब्याह नहीं कर सकता है। अगर वह विवाह करेगा तो उसे कड़ी से कड़ी सजा देंगे। आज के शिक्षित समाज, आधुनिक युग में भी इस प्रश्न का समाधान नहीं हुआ है। समाचार पत्रों के पन्नों पर आये दिन इस तरह की खबरें पढ़ने को मिलती है। 'चूतिया बना रहे हो' इस कहानी में भी चुनाव के वक्त अपनी–अपनी जातियों की मीटिंग ली जाती है। मीटिंग में निर्णय लिया जाता है कि चाहे मर ही क्यों नहीं जावे लेकिन अपनी जाति में रहो जो बाहर जायेगा वह दोगला और उसका हुक्का–पानी बंद करने का आवाहन करना यह जाति–पांति की समस्याओं को उजागर करता है। चुनाव के वक्त अपना राजनीतिक स्वार्थ साधने हेतु गुण्डों द्वारा समाज–समाज में जातिभेद की भावना को बढ़ावा देकर लोगों के आपसी स्नेह सम्बन्ध को खत्म करने का प्रयास करते हैं।

यहाँ संजीव के विचार अच्छे लगते हैं। "जाति प्रेम और जाति घृणा का जो जलजला आया कि रहा सहा भाईचारा भी खत्म हो गया।" इससे यह बात स्पश्ट होती है कि राजनीति का सहारा लेकर सत्ता, व्यवस्था, कुर्सी में बैठे बड़े–बड़े लोग विभिन्न प्रलोभनों के लालच में समाज–समाज में घृणा तथा हिंसा भड़काकर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं।

RNI No. 1276610

मानव जीवन में शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। भारत सरकार शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए नाना प्रकार की योजनाएं चला रही है तथा आगे भी इस दिशा में कार्य करने को प्रतिबद्ध है। क्योंकि आधुनिक युग में शिक्षा को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। आज उसी को पढ़ा लिखा या शिक्षित समझा जाता है। जिसे कम्प्यूटर, मोबाईल, अंग्रेजी का ज्ञान हो। आज हमारे देश में दलितों, किसानों, मजदूरों, गरीबों का पैसों के अभाव के कारण शिक्षा से वंचित रहना पड़ता है। सजीव ने इस समस्या को अपने रचनात्मक साहित्य में सूक्ष्मता से उठाया है। कहानी 'प्रेतमुक्ति' में बेटे अपने पिता के साथ लड़ते झगड़ते है। इसलिए की उन्हे अनपढ क्यों रखा गया ? उन्हें पढाया-लिखाया क्यों नहीं गया ? अगर उन्हें थोड़ा बहुत भी पढाया-लिखाया होता तो वे अपने परिवार का बोझ उठाने में सहायक हो सकते थे। प्रस्तुत कहानी में दलितों का बेटा जगेसर का ब्याह होने पर परिवार में एक व्यक्ति बढ जाता है तब बाप बेटे झगड़ते है। जगेसर कहता है 'थोड़ा पढा लिखा दिया होता तो यह नौबत न आती।' इस कथन से ज्ञात होता है कि जगेसर पढा लिखा न होने के कारण उसे नौकरी नहीं मिलती परिणामस्वरूप अपना पारिवारिक खर्च चला पाने में वह असमर्थ है। अर्थाभाव के कारण जन सामान्य शिक्षा पाने के लिए स्कूल की फीस भर पाने में असमर्थ है जिससे उनकी शिक्षा बीच में ही छूट जाती है। उनकी गरीबी, दरिद्रता, असक्षमता, उनकी अशिक्षा के अधूरी रह जाने का मुख्य कारण है। इसी कारण अशिक्षा का प्रश्न आज भी देश के सामने विकराल रूप लेकर खडी है। 'मरोड़' कहानी में मास्टर दीनानाथ की पत्नी अनपढ होने के कारण पछताते हैं। वे कहते है 'वह थोडी शिक्षित और सुसंस्कृत होती तो बच्चे इस कदर न बिगडते।' इस कथन से स्पश्ट होता है कि शिक्षा के अभाव में बच्चे संस्कारहीन हो जाते है, बिगड़ जाते हैं। संसार का बोझ नही उठा पाते, प्रगति करने के बजाय ससार की प्रतियोगिता में पिछड़े रह जाते हैं और जीवन भर दुख और अवसाद में घिरे रहते हैं, किसी के सामने आत्म-सम्मान के साथ जी नही पाते हैं।

वर्तमान समय में समाज के सामने अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न है, भ्रश्ट अधिकारियों द्वारा आम जनता का भोशण करना। सरकार आम आदमी के हित में अनेकानेक योजनाएं बनाती हैं किन्तु व्यवस्था की कमजोरी और भ्रश्टाचार के कारण उसका लाभ आम आदमी तक नहीं पहुंच पाता भ्रश्ट अधिकारी और राजनीतिक पार्टियां ऊपर ही ऊपर इसका लाभ उठा ले जाते है, जिससे न जाने समय-समय पर कितने ही घोटाले होते रहते हैं और समाचार पत्रो में ये खबर भी छपते है जिनमे बड़े-बडे मंत्री तक के हाथ होने की संभावनाएं बतायी जाती हैं। योजनाओ के लाभ का उल्लेख केवल कागजों पर ही मिलते हैं। डॉ. पांडुरंग पाटील कहते हैं-"विकृत जनतंत्र के कारण इस युग में व्यवस्था शब्द को

सुनते ही वितृश्णा होने लगती है। कर्मचारियों की कार्यपद्धति इतनी भ्रश्ट हो गई है कि ईमानदार व्यक्ति को अपना जीवन निर्वाह करना मँहगा पड़ रहा है। भ्रश्ट कर्मियों के कृत्य दिनो दिन असह्य होते जा रहे है।" इस यंत्रणा से हमेशा आम आदमी का ही भोशण–दोहन होता है। हमेशा वे ही त्रस्त रहते हैं। 'दुनिया की सबसे हसीन औरत' कहानी में ओराँव जनजाति की अनपढ गरीब औरत सब्जी लेकर जब ट्रेन से जा रही है तो टी.टी. साहब कहता है "देखो हमारी गाड़ी मे चढ़ो तो अच्छी सब्जियां लेकर वरना दूसरी गाड़ी देखो।" इस प्रकार ट्रेन के अधिकारी लोग भी आदिवासियों का भोशण करते दिखाई देते हैं। 'पाँव तले की दूब' उपन्यास में झारखण्ड में स्थित आदिवासियों का चित्रण हुआ है। यहाँ उद्योगपति नये–नये उद्योग शुरु करने हेतु आदिवासियों की जमीन उनसे छीन लेते हैं। उन्हें विस्थापित कर देते हैं। अधिकारी लोग भी इन्हीं की सहायता करते है। यह भोशण देखकर कथानायक कहता है–"उन्हें जमीन से भी बेदखल किया जा रहा है। मुआवजा भी अफसरों के पेट में।" प्रस्तुत विवेचन से पता चलता है कि उद्योगपति और अधिकारियों के बीच में ताल–मेल और साँठ–गाँठ के कारण आदिवासी बेघर होते जा रहे हैं, विस्थापित होते जा रहे हैं, उनका भोशण हो रहा है।

हमारी समाज व्यवस्था में जनता की सेवक पुलिस कहलाती है। लेकिन आज पुलिस अपनी वर्दी का, अपने ओहदे एवं रुतबे का गलत प्रयोग करते हुए आम आदमी का भोशण करती है। समाज के रक्षक ही भक्षक बनते जा रहे हैं। वी.ए. गार्मा लिखते हैं कि–"कल्याणकारी राज्य में पुलिस की भूमिका एक समाजसेवी संगठन की होती है। उसे कानून तथा व्यवस्था बनाये रखने तथा अपराधों की रोक थाम करने वाली बुनियादी भूमिका निभानी होती है।" लेकिन आधुनिक काल में पुलिस के भ्रश्टाचार के कारण आम आदमी शिकायत लेकर पुलिस थाने में जाने से डरने लगता है। संजीव की 'ट्रैफिक जाम' कहानी में अपघात की घटना के कारण ट्रैफिक जाम होती है। पुलिस घटना स्थल पर आते समय बीच में एक शराब पिया हुआ आदमी नजर आता है, उसे पहले पीटते हैं। एक चोर पुलिस की जेब काटता है। तब सब लोग कहते हैं–"इतने पैसे एक दिन में उगाह लेते हो सिपाही जी" इससे स्पश्ट होता है कि इनकी तनखा कम होती है लेकिन जेब में पैसे ज्यादा होते है। इस तरह भ्रश्टनीति का बोलबाला समाज में देखने को मिलता है। 'भूमिका' नामक कहानी में सेठ के कहने पर कुछ लोग गरीबों की बस्ती में आग लगा देते हैं। आग बुझाने के पश्चात् हमेशा की तरह पुलिस वहाँ पहुँच जाती है। संजीव लिखते हैं–"पुलिस जैसा पहले तय था बाद में आयें, हम फिर भी छुट्टे सांडों की तरह घूम रहे थे।" इस तथ्य से स्पश्ट होता है कि पुलिस जो आम जन की सुरक्षा के लिए नियुक्त की जाती है। अवसर पड़ने पर आमजन की सहायता न कर आग लगाने वाले गुण्डों का साथ देती है। वे अपराध

करके भी खुले आम समाज मे बिना किसी डर भय के घूमा करती है। जिससे समाज मे अपराध करने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और समाज इससे प्रभावित रहता है। आम आदमी डर-डर कर जीने के लिए विवश होता है।

हमारे समाज के सामने और एक प्रश्न खड़ा होता है, व्यापारियों द्वारा किसानो का शोषण। डॉ. विमल महाजन शोषण के बारे मे लिखती है कि "कर्ज वह मेहमान है जो एक बार आकर जाने का नाम नही लेता।" इससे स्पष्ट है कि किसान अनाज का निर्माण खेती में करता है, लेकिन ब्याज के रूप में महाजन, व्यापारियो के जेब भरता चलता है। संजीव के 'सागर सीमांत' और 'दुश्मन' जैसी कहानियो में किसानो, मजदूरों के शोषण की समस्या को बड़ी शिद्दत के साथ अभिव्यक्त किया गया है।

भारतीय समाज मे नारी को वैसे तो प्राचीन काल मे अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता था। जहाँ नारी की पूजा होती है वहीं देवता वास करते है, ऐसा कहा जाता था। यज्ञ, पूजा, शिक्षा इत्यादि कार्यों मे उन्हें समान रूप से स्थान दिया जाता था। किन्तु धीरे-धीरे परिस्थितियां बदल गयी है। पुरुष की तुलना मे आज कहीं न कहीं नारी को दोयम दर्जे का स्थान दिया जाता है। आज शिक्षा के प्रचार के कारण नारी पढ लिखकर अपने कर्तव्य के प्रति सचेत हो चुकी है। आज का दौर महिला सशक्तिकरण और नारी विमर्श का दौर है किन्तु इतना होने पर भी उसे आज भी एक भोग्य वस्तु के रूप में भी देखा जाता है परन्तु स्त्री इन चीजों से लगातार लड़ कर बाहर आने की कोशिश करते हुए स्वयं को समाज का आवश्यक और महत्वपूर्ण अंग साबित करने का सफल प्रयास कर रही है। पुरुशो से आगे निकलने का प्रयास कर रही है। उनके बीच अपना स्थान बनाने का प्रयास कर रही है। संजीव के साहित्य में नारी के पारिवारिक, मानसिक, शारीरिक एवं लैंगिक शोशण का बड़ा ही सजीव और मार्मिक चित्रण मिलता है। 'जसी बहू' कहानी में सितई पंडित जसी बहू का बलात्कार करता है, लैंगिक शोशण करता है। गर्भवती रहने पर बदनामी के डर तथा अपनी जिम्मेदारी से मुक्ति के लिए गर्भ गिराने की बात करता है। लेकिन बहू का आत्म सम्मान अभी बचा हुआ है और वह इसका कड़ा विरोध करती है। इस पर सितई पण्डित उसे मारता-पीटता है। इतना ही नही उसके पति के वापस आने पर भी उसे सीखा पढ़ा देता है। जिससे जसी बहू को उसका पति मार-पीट कर घर से बाहर निकाल देता है और दूसरा विवाह कर लेता है। यहाँ नारी शोशण का अभिशप्त रूप है किन्तु जसी बहू हार नहीं मानती तथा अपने बलबूते जीने का निश्चय करती है जोकि स्त्री सशक्तिकरण का अच्छा उदाहरण है। 'किसन गढ़ के अहेरी' उपन्यास में जमींदार ज्योतिश बाबा का गजब का धंधा है। संजीव लिखते है कि "गाँव में हाथ की रेखाएँ पढ़ते-पढ़ते बदन की

सारी रेखाएँ पढ़ डालते है।" स्त्री का भोशण समय–समय पर अवसर मिलते ही सभी करने का प्रयास करते है।

संजीव ने अपनी रचनाओं में भादी–ब्याह को लेकर समाज के सामने खड़े होने वाले सवालों को भी उठाया है। आधुनिक युग में भी भादी–विवाह करते समय जात–उपजात, धर्म, गोत्र, वंश आदि के बारे में पूछताछ होती है। शादी ब्याह के अवसर पर दहेज प्रथा समाज के लिए घातक और विकराल समस्या है, जो धीरे–धीरे सुरसा की तरह अपना मुँह फाड़कर लड़की पक्ष के लोगो को निगल जाती है। ज्योत्सना शर्मा लिखती है कि "लोग जाति–पाति का ध्यान इतना रखते है कि गरीब से गरीब व्यक्ति भी इसके पालन में अपने आप पर गर्व करता है।" संजीव के कथासाहित्य में 'जब नशा फटता है' कहानी में माईकल की लड़की तथा जोसेफ का लड़का एक दूसरे से प्रेम रखते हैं तथा दोनों भादी करना चाहते हैं। दोनों की भादी करने से पहले जोसेफ माईकल की जात जानना चाहता है। जोसेफ अपने ताड़ीखाने के दोस्त भग्गु से कहता है, "इसाई होने के पहले कौन जात का था माईकल जरा पता करा तो" – इस कथन से यह बात पता चलती है कि आदमी कितना भी बड़ा या छोटा हो भादी व्याह के मामले में जात–पात का खेल खेलता आया है, इस बात को लेकर खून–खराबा भी समाज में हो जाता है। पहले खुले आम प्रदर्शन किया जाता था, आज पर्दे के पीछे स चल रहा है।

संजीव ने अपनी रचनाओ में नाना प्रकार के भोशण की समस्या को उजागर किया है। हमारे भारतीय समाज में जाति–व्यवस्था, वर्ण–व्यवस्था को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। इसी कारण हमारे समाज में ऊँच–नीच, अमीर–गरीब, छोटा–बड़ा, सवर्ण–दलित जैसे भेद निर्मित हो गये हैं। इसी सामाजिक भेदभाव के कारण शोषण की समस्या समाज के सम्मुख उत्पन्न हो गयी है। भोशण को लेकर डॉ. प्रभा बेनीपुरी के विचार कुछ इस प्रकार है–"जब तक मनुष्य मात्र के प्रति मनुश्य हृदय में प्रेम का भाव आविर्भूत न हो मनुश्यता कैसे मिटेगी ! कहीं व्यक्ति का समाज और कहीं राश्ट्र एक–दूसरे का भोशण करेगे ही।" इस कथन से स्पश्ट है कि यह समस्या प्राचीन काल से ही चली आ रही है। जब तक मनुश्य के मन में प्रेमभाव, सौहार्द की भावना, समानता, समता और बंधुत्व की भावना निर्मित नही होगी तब तक भोशण की समस्या समाज में बनी रहेगी। संजीव ने 'किसन गढ़ का अहेरी' उपन्यास में जमींदारों द्वारा किये जा रहे भोशण से गरीब दलित किस तरह पीड़ित, प्रताड़ित, त्रस्त है, इसका उल्लेख सजीवता के साथ किया गया है। इस उपन्यास के जमीदार इनरपतिसिंह का बेटा रुपई, बल, धन के कारण हरिया नामक दलित पर अमानुशिक अत्याचार करता है। उसका कसूर यह है कि जमींदार की बेटी को पेड़ से आम तोड़कर देता है। हलवाहा यह खबर बढ़ा–चढ़ाकर कहता है तब रुपई कहता

है कि 'यह मजाल की आखे गडावे मालिक की लड़की पर, जिस पत्तल मे खाए उसी में छेद करे।' इसका परिणाम भयंकर निकलता है और हरिया की जान चली जाती है। आज भी उच्च वर्ग के द्वारा निम्न वर्ग, गरीब, दलित का इसी तरह शोषण किया जाता है। ठेकेदारों द्वारा काम करने वाले मजदूरो का शोषण किया जाता है। सरकार से काम का ठेका लेते समय ज्यादा पैसा लिया जाता है तथा मजदूरो को कम से कम पैसा देकर काम करवाया जाता है और मुनाफा ठेकेदार के पेट मे जाता है, बेचारा गरीब मजदूर जहालत, गरीबी, बेबसी की जिदगी जीने को मजबूर होता है। मजदूर, मेहनतकश वर्ग की कमजोरी का फायदा उठाते हुए वे उनका आर्थिक, शारीरिक, मानसिक शोशण करते है। ठेकेदार पैसो से धनवान हो जाता है और मेहनत करने वाला, खून को पसीने की तरह बहाने वाला मजदूर गरीब का गरीब ही रह जाता है। 'धार' उपन्यास में ठेकेदार माफिया आदिवासियों से अवैध कोयला खनन करवाते है, पेट की आग बुझाने के लिए एक दिन कोयला खनन करते समय जमीन धँसने से मिट्टी का एक ढेला गिर जाता है। फोकल नामक मजदूर उसमे धँस जाता है, वह बचाने के लिए चिल्लाता है, तब ठेकेदार कहता है कि "अरे मार दो अभी जिंदा ही है साला मार के भर मे जूनसब जगह।" इससे स्पस्ट है कि उन्हें मजदूरो की कोई फिक्र नहीं है, चाहे मजदूर मरे या जीये इससे उन्हें कोई लेना देना नही होता। सिर्फ अपना मुनाफा, लाभ और स्वार्थ निकालना ही उनका उद्देश्य होता है। 'धार' में मैना का बलात्कार जेलर द्वारा किया जाता है, उसे जीते जी उसके पिता और पति त्याग कर अंतिम संस्कार कर देते है। कबाडी मंगर के साथ बिना विवाह किये साथ रहती है। किन्तु वह भी उसे धोखा देता है। आदिवासी मजदूर समुदाय अपनी एकजुटता तथा सहयोग से जनखदान का निर्माण करते हैं किन्तु कोयले का अवैध खनन करने वाले माफियाओ तथा सरकारी कोयला खदानों को यह बात पचती नही है और जनखदान को नश्ट कर दिया जाता है। मैना और अनेक मजदूर मारे जाते है। इस तरह यह उपन्यास आदिवासी मजदूरो के शोशण का बडा ही मार्मिक चित्रण उपस्थित करता है।

समाज में एक और महत्वपूर्ण समस्या है और वह है व्यसनाधीनता की समस्या। संजीव की कुछ कहानियो मे इस समस्या का भी उदघाटन हुआ है। 'तिरबेनी का तड़बन्ना' कहानी मे चैत का महीना आने पर गाँव के लोग ताड़ी पीकर नशे में चूर हो जाते हैं। एक दूसरे के साथ गाली गलौज, झगड़ा करते हैं। संजीव लिखते हैं कि "चैत आते ही सारा गाँव प्रेतो जैसा बर्ताता है।" नशे मे गाँव के लोग क्या बोलते हैं, होश न होने के कारण उन्हें खुद भी मालूम नहीं होता है। इतना ही खुद पर नियंत्रण न होने के कारण स्त्रियो के साथ अभद्र व्यवहार करते हैं। परिणाम स्वरूप परिवार बिखर जाते है। 'जब नशा फटता है' कहानी में मेहतर लोग मैला ढोने का काम करते हैं।

समाज और घर-घर की गंदगी साफ करते है। उसकी बदबू से बचने के लिए बार-बार बोतल शराब पी लेते है। पेट की मजबूरी उनसे ऐसे घृणित कार्य भी करा ले जाती है।

संजीव के कथासाहित्य में प्रदूशण की समस्या पर भी प्रकाश डाला गया है। 'धार' नामक उपन्यास मे कोयला खदान में प्रदूशण ही प्रदूशण दिखाई देता है, जिससे वहा का आदिवासी समाज अत्यधिक प्रभावित है। धूप और धुए में जलती हुई बस्तियां, दमघोटू वातावरण, कुहासा, बजबजाती नालियां, गंदी गलियां चारों ओर गंदगी का साम्राज्य फैला है। संजीव लिखते हैं कि "न दिन है न रात, दोनों की दहलीज पर संथाल परगना का पूरा नंगा इलाका घायल गुर्राते सुअर की तरह पड़ा है। नंगी-अधनंगी पहाडियाँ, जहाँ तहाँ खडे शाल महुए खजूर और ताड़ के पेड़, बेर की झाडिया, धुवई बंजर धरती, सूखती नदियाँ, सूखते कुए, तालाब, भयंकर पोखरिया, खाढे, जहां तहां सोये पड़े मुर्दे से लोग।" इससे स्पश्ट होता है कि मनुश्य के भौतिक सुखों के कारण प्राकृतिक घटकों को हानि पहुंच रही है। एक तरफ विकास है तो दूसरी तरफ समाज अवनति के गर्त में गिरता जा रह है। न जाने कितने वर्षो से राँची(झारखण्ड) मे कोयला खदानों के नीचे आग लगी हुई है किन्तु उसे बुझाने का सरकार द्वारा कोई प्रयास नही किया जा रहा है, जिससे प्राकृतिक संसाधन नश्ट हो रहे हैं। 'पाँव तले की दूब' उपन्यास मे झारखण्ड स्थित मेझिया गाँव केन्द्र बिंदु है। उपन्यासकार इसके माध्यम से यह बताना चाहता है कि औद्योगिकीकरण और विकास के नाम पर किस प्रकार गाँव तथा आदिवासियों को विस्थापित किया जा रहा। समाज के प्रगति एवं विकास का भ्रम फैलाकर गाँव की जमीन लेते समय नौकरी देने का प्रलोभन दिया जाता है। मकान, शिक्षा, पानी देने का वादा किया जाता है। गाँव के लोगो को आवश्यक सफाई के अभाव में नाना प्रकार की बीमारियो का भी का सामना करना पडता है। संजीव लिखते है कि "लेकिन चचच यह रोग तो मनसा नाले के चलते है। बिजली के कारखानो का सारा गंदा पानी बहता है इससे और उससे भी जहरीली है हवा।" बिजली के कारखाने से बहने वाली गंदगी, गंदा पानी, जहरीली हवा के प्रभाव से लोगों को लकवे की बिमारी हो रही है। यहा लोगो को न तो शुद्ध खाना मिलता है, न शुद्ध हवा पानी। अस्पतालों का दूर-दूर तक नामो निशान नही।

सारांशतः हम देखते है कि संजीव ने अपने स्तर पर अपनी रचनाओं में जाति भेद-वर्गभेद शोशण, छुआ-छूत, शराबखोरी, धर्मान्तरण, अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी, विस्थापन, मजदूरों पर अत्याचार, व्यसनाधीनता, भ्रश्ट व्यवस्था, नक्सलवाद, डाकू समस्या, पुलिस द्वारा शोशण, प्रदूशण की समस्या, दलित स्त्री समस्या न जाने कितने ही प्रकार की समस्याओ का चित्रण कर समाज के सामने लाने का प्रयास तो किया ही है इसके साथ ही समाज और सरकार को

गिलकर इन दिशाओं में सुधार करने के लिए पहल करने के लिए भी रास्ता दिखलाने का कार्य किया है।

संदर्भ

1. डॉ. सलीम वैंकटेश्वरराव–यशपाल के उपन्यास : समस्यामूलक अध्ययन, पृ. –24।

2. संजीव–भूमिका तथा अन्य कहानियाँ, पृ.–43, 78, 47।

3. संजीव–प्रेतमुक्ति, पृ.–23।

4. संजीव–तीस साल का सफरनामा, पृ. –35।

5. डॉ. ज्योत्सना भार्मा–शिवानी का हिन्दी साहित्य सामाजिक परिप्रेक्ष्य में, पृ.–165।

6. डॉ. प्रभा बेनीपुरी– बेनीपुरी जी के नाटकों में सामाजिक चेतना, पृ.–133।

7. संजीव–किशनगढ़ का अहेरी, पृ.–55, पृ.–31।

8. संजीव–धार, पृ.–183, पृ.–41।

9. डॉ. पांडुरंग पाटील–देवेश ठाकुर और उनका साहित्य, पृ.–138।

10. संजीव–दुनिया की सबसे हसीन औरत–पृ.–144, पाँव तले दूब– पृ.–14, 55, आप यहां हैं–पृ.–81, प्रेतमुक्ति– पृ. –102।

11. डॉ. विमल– प्रेमचन्द के उपन्यासों में चित्रित समस्याएं, पृ.–177।

Editorial BOARD

1. **Dr Arvind Pandey,** Department Of Physics B.N.D College Kanpur
2. **Rajesh Nigam,** Associate Professor Department Of Economics D.B.S College Kanpur
3. **Ashok Mishra,** Department Of Chemistry D.B.S College Kanpur
4. **Anuja Shukla,** Hod Department Of History Dr Haribansh Rai Bachhan Dg Unnao
5. **Santosh Kumar Tripathi,** Department Of Chemistry V.S.S.D PG College Nawabganj Kanpur
6. **Dr .Pralial Pratap Singh,** Department Of Commerce R.S.G.S Pukhrayan Kanpur Dehat
7. **Dr Swami Nath,** Hod Department Of Mechanical Engg Rajkiya Polytechnic Kanpur
8. **Dr Manish Tripathi,** Associate Professor Department Of Library Science D.S.N Pg College Unnao
9. **Dr Shivshankar Singh Kushwaha,** Department Of Chemistry P.P.N (PG) College Kanpur

BOTANY DEPARTMENT

Dr. Sunil Singh, DAV College,Kanpur u.p. India
Dr. Piyush Mishra, DAV College Kanpur u.p. India
Dr. A. P. Saxena, DAV College Kanpur u.p. India

CHEMISTRY DEPARTMENT

Dr. Janeshwar Mishr,Saraswati Mahila Mahavidyalaya, Kanpur u.p. India
Dr. D. P. Rao, DAV College, Kanpur u.p. India
D. Chandan Prasad Srivastava, (Professor) D. V. A. College,, Kanpur.u.p. India
Dr. S. S. S. Kushwaha, (Principal) PPN Degree College, Kanpur.u.p. India
Dr. Santosh Kumar, VSSD Degree College, Kanpur. u.p. India
D. Niru Nigam Sikroriya, (Principal) Saraswati Mahila Mahavidyalaya, u.p. India
Mr. Pankaj K, Luck., u.p. India

COMMERCE DEPARTMENT

Dr. Shikha Bala Srivastava, Commette Department, DAV College,Kanpur u.p. India
Dr. Arun Upadhayay, Comrnerce Department, DAV College,Kanpur u.p. India
Dr. Amit Gupta, Commerce Department, DAV College,Kanpur u.p. India
Dr. Pankaj Kishor Shukla, Atmaram Mahavidyalaya, Alapur,(Budaun), UP

ECONOMICS DEPARTMENT

Dr. M. P. Khanna, Economics Department, DAV College,Kanpur u.p. India
Dr. Rajesh Nigam, Economics Department, DAV College,Kanpur u.p. India
Education Department, DAV College,Kanpur u.p. India
Dr. Trimal Singh, Shri INPG College (Lucknow), DAV College,Kanpur u.p. India
Dr. H. C. Mishra, Education Department, DAV College,Kanpur u.p. India
Dr. Fateh Bahadur Singh Yadav, Education Department,DAV College,Kanpur u.p. India
Dr. Ajay Yadav, Education Department, DAV College,Kanpur u.p. India

GEOGRAPHY DEPARTMENT

Dr. Ramakant Velma, Geography Department, DAV College,Kanpur u.p. India

HINDI DEPARTMENT

Dr. Madan Lal Gupta, Hindi Department, DAV College,Kanpur u.p. India
Dr. Deeps Shukla, Hindi Department, DAV College,Kanpur u.p. India

HISTORY DEPARTMENT

Dr. Shailendra Kumar, (Managing Editor) KK Degree College (Etawah)
Dr. Anuja Shukla, Dr Ilarivansh Rai Bachchan Degree College (Unnao)
Dr. Shalini Mishra, Manohara Smriti Mahila Mahavidyalaya Gauri Beghapur (Unnao)

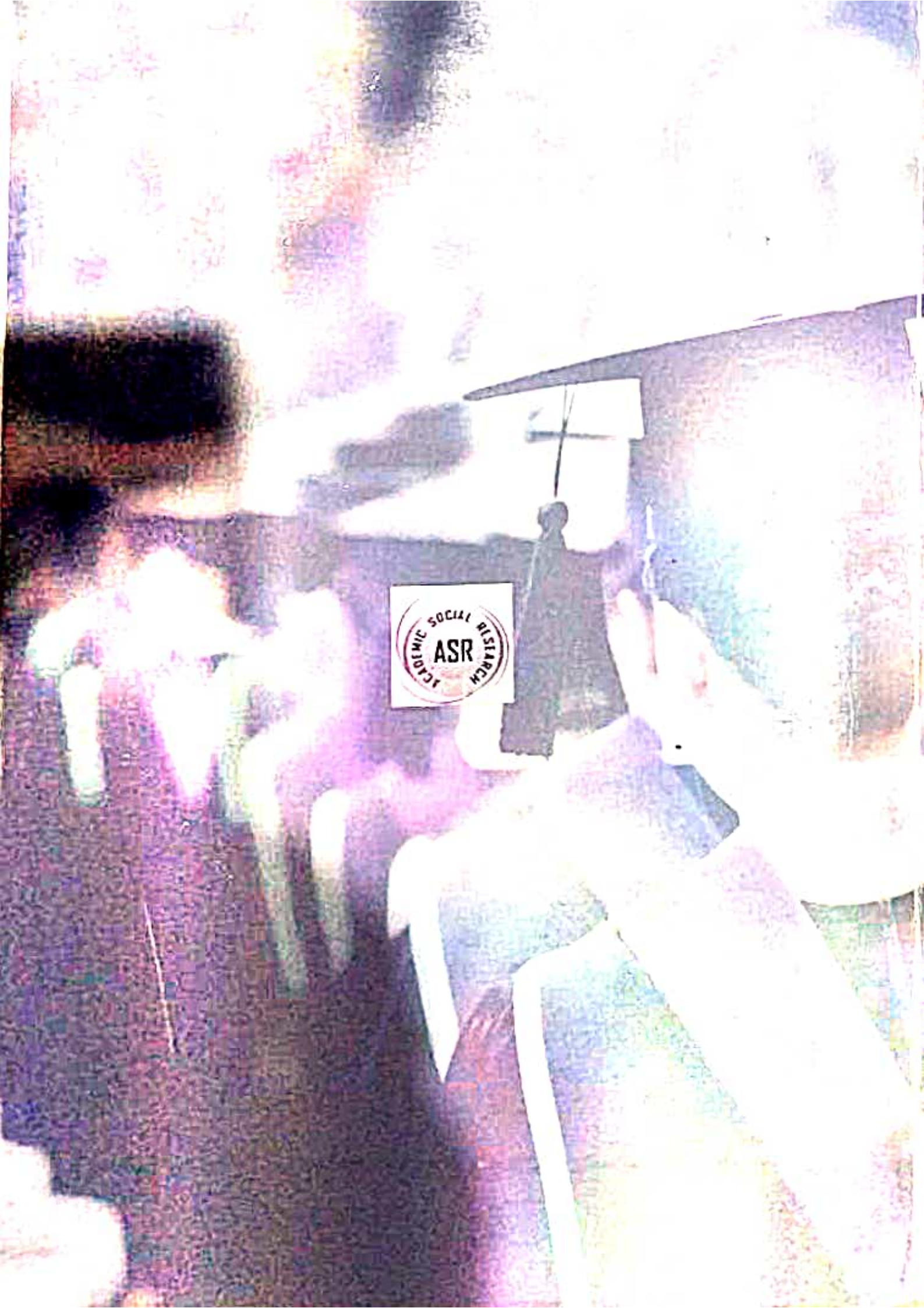
ACADEMIC SOCIAL RESEARCH
ASR